ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-3* April-2017
Innovation The Research Concept

बच्चो के व्यक्तित्व निर्माण में संयुक्त परिवार की भूमिका: एक शोधात्मक अध्ययन

लक्ष्मी शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
जी0 एफ0 पी0 जी0 कालेज,
शाहजहाँपुर, उ0 प्र0

सारांश

भारतीय संस्कृति की आधारशिला संयुक्त परिवार है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने संयुक्त परिवार को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है –

आर0 पी0 देसाई के अनुसार, ''हम उस परिवार को संयुक्त परिवार कहते है जिसमें एकाकी परिवार से अधिक पीढ़ियों (अर्थात् तीन अथवा अधिक) के सदस्य एक–दूसरे से सम्पत्ति, आय तथा परस्पर अधिकार एवं कर्तव्यों से बंधे है।''

डॉ० कार्वे के अनुसार, '' एक संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का समूह है, जो सामान्यतः एक मकान में निवास करते है, जो एक रसोई का पका भोजन करते है, जो सामान्य सम्पत्ति के भागी होते है, जो समान उपासना में भाग लेते है तथा जो किसी न किसी प्रकार से एक–दूसरे के रक्त–संबंधी है।''

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में संयुक्त परिवार महती भूमिका निभाता है। प्रस्तुत शोध लेख में इस तथ्य पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व निर्माण,संयुक्त–सामूहिक रुप से,सर्वांगीण–चहुँमुखी विकास, रिश्तेदार–पिता की ओर के सगे–सम्बन्धी, नातेदार, माता की ओर के सगे–सम्बन्धी

प्रस्तावना

बच्चों के विकास एवं व्यक्तित्व निर्माण में उनके परिवार का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है। परिवार के लोग अपने जीवन में कुछ मूल्यों और आदर्शों को मान्यता देते है तथा उनका अनुगमन करते है। बालक पर भी इन मूल्यों और आदर्शों का प्रभाव पड़ता है और वह अपने भावी जीवन में उन्ही का अनुसरण करने की चेष्ठा करता है। बालक में विभिन्न रुचियों का विकास पारिवारिक परिवेश के अनुसार होता है, परिवार में जिन वस्तुओं के प्रति अरुचि प्रदर्शित की जाती है, बालक भी उनके प्रति रुचि अथवा अरुचि दिखाता है। शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास में क्योंकि रुचियों का विशेष महत्व है, इसलिये अभिभावकों का यह दायित्व है कि वे बालकों में श्रेष्ठ रुचियों का पोषण करें तथा उन्हे दूषित रुचियों, मनोवृत्तियों व आदतों से बचायें।

बालक में विचार, तर्क, कल्पना, स्मृति, निरीक्षण आदि शक्तियों से मानसिक विकास होता है। बालक जब परिवार में विभिन्न व्यक्तियों व वस्तुओं के सम्पर्क में आता है तथा पारिवारिक घटनाओं से जब अपने को जुड़ा पाता है, तो उसका मानसिक विकास होता है। परिवार बालक को शारीरिक विकास हेतु उचित वातावरण पौष्टिक भोजन, वस्त्र, खेलकूद, मनोरंजन, व्यायाम, चिकित्सा आदि की समुचित व्यवस्था करता है। परिवार में रहकर बालक में स्वच्छ रहने, व्यायाम करने तथा स्वास्थ्यवर्धक क्रियायें करने की आदत पड़ जाती है जो उसके शारीरिक विकास में सहायक सिद्ध होती है। घर का स्वच्छ या अस्वच्छ वातावरण तथा परिवार के सदस्यों के मध्य सम्बन्ध बालक को संवेगात्मक दृष्टि से प्रभावित करते है, जिन परिवारों में सदस्यों के सम्बन्ध मधुर होते है, वहां बालकों में स्नेह, आनन्द, सहानुभूति, प्रसन्नता, आत्मविश्वास आदि अनेक प्रभावात्मक संवेगों का विकास होता है। इसके विपरीत जिन परिवारों में हर क्षण लड़ाई–झगड़ा, ईर्ष्या–द्वेष तथा वैमनस्य का वातावरण रहता है। वहां बालक में भय, क्रोध, घृणा, ईर्श्या, चिन्ता के निषेधात्मक संवेग उत्पन्न हो जाते है। अतः पारिवारिक वातावरण का बालक के संवेगात्मक विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

संयुक्त परिवार में एक बच्चा पूरे परिवार की जिम्मेदारी होती है जबकि एकल परिवार में बच्चे का निकट संबंध केवल माता–पिता से होता है।

माता–पिता के व्यवहार से ही बालक का व्यक्तित्व सबसे अधिक प्रभावित होता है। माता–पिता के व्यवहार से ही बालक का सांस्कृतिक विकास होता है तथा यह प्रभाव विशिष्ट समाज की संस्कृति के प्रतिमान के अनुसार होता है।एकल परिवार मुख्यतः पाश्चात्य संस्कृति से ही प्रभावित होते है, जिससे एकल व संयुक्त परिवार के बच्चों के व्यक्तित्व में अन्तर स्पष्ट देखा जा सकता है क्योंकि संयुक्त परिवार में प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, पीढ़ियों से चले आ रहे व्रत, त्योहार, परंपराओं आदि का ज्ञान परिवार के द्वारा बच्चे को दिया जाता है जिससे उसके व्यक्तित्व में भारतीय सभ्यता एवं संस्कारो को स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है जिससे संयुक्त परिवार के बालकों में बर्हिमुखी स्वभाव, सहयोगी भावना, सुरक्षा की भावना, भारतीय संस्कार आदि भावनायें कूट–कूट कर भरी होती है। संयुक्त परिवार में भारतीय संस्कृति के अनुसार बालक का पद बड़ा ही सम्मानित माना जाता है।

एकल परिवार में अधिकतर सहयोग की भावना की कमी तथा तनाव के चलते माता–पिता बालक को बात–बात पर झिड़कते अथवा पीटते रहते है। इस प्रकार के दमनात्मक एकाधिकारी व्यवहार से बालक के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है तथा वह अन्तर्मुखी हो जाता है जिसमें वह अपने मन की बातों को भी किसी से साझा नहीं कर पाता परिणामस्वरुप जिन कार्यों को करने से उसके माता–पिता उसको रोकते है, उनको वह स्वप्नों, दिवास्वप्नों और कल्पनाओं में पूरा करने की चेष्टा करता है क्योंकि यहां बालक के पास संयुक्त परिवार की भांति अन्य स्वजन नहीं होते जिनसे बालक अपनी बात साझा कर सके। अतः वह अन्तर्मुखी हो जाता है।

माता–पिता के दमनात्मक अनुशासन का प्रभाव सभी बालकों पर एक–सा नहीं पड़ता है क्योंकि इसमें बालक के जन्मजात स्वभाव और प्रवृत्तियों का भी बड़ा महत्व है। इस प्रकार जहां एक बालक प्रताड़ित होकर अन्तर्मुखी बन सकता है, वहीं दूसरी ओर बालक इस प्रकार के व्यवहार में दबंग और उद्दण्ड भी बन सकता है।

दूसरी ओर एकल परिवार में यदि माता–पिता बालक को अत्यधिक दुलार करते है तो बालक माता–पिता पर अत्यधिक निर्भर रहने लगते है जिससे बालक में स्वतन्त्र रुप से निर्णय करने की योग्यता का समुचित विकास नहीं हो पाता है जो वयस्क आयु में जीवन संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संयुक्त परिवार में, परिवार के सदस्य सामूहिक रुप से बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रखर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, जिससे संयुक्त परिवार के बच्चों का व्यक्तित्व एकल परिवार के बच्चों से अपेक्षाकृत अधिक बर्हिमुखी, आत्मविश्वास पूर्ण एवं सहयोगी भावना से युक्त होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

बालक के आचरण चरित्र, सामाजिक व्यवहार आदि गुणों को मिलाकर बनने वाला अभौतिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप ही उसका व्यक्तित्व होता है। हमारे प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार में पले–बढ़े बच्चो के व्यक्तित्व विकास में अन्तर का अध्ययन करना एवं इस अन्तर के लिए उत्तरदायी कारणों पर प्रकाश डालना है।

अधिकतर हम देखते है कि एकल परिवार का बच्चा अन्तर्मुखी तथा एकान्तवासी होता है। वह व्यक्तियों की अपेक्षा वस्तुओं को अधिक पसंद करता है, अपना प्रत्येक कार्य अकेला करता है तथा विचारो में समझौता करने से बचता है। इसके विपरीत संयुक्त परिवार में पला–बढ़ा बच्चा प्रारंभ से ही बहिर्मुखी, सहयोगी भावना वाला, व्यवहारिक मामलों में ध्यानशील तथा दूसरो के निर्देशों का पालन करने वाला होता है।

अतः स्पष्ट है कि संयुक्त एवं एकल परिवार के बच्चों के व्यक्तित्व विकास में बहुत अन्तर पाया जाता है, इस अन्तर के कारणों को समझाना एवं इस समस्या के समाधान पर विचार करना ही हमारे अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

वर्तमान सामाजिक परिवेश में प्रस्तुत शोध–पत्र का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज लोकतन्त्र का बोलबाला है, फिर भी देश की पारिवारिक व्यवस्था उसकी सामाजिक व्यवस्था पर ही मुख्यतः निर्भर करती है।

संयुक्त परिवार में बच्चे भावनात्मक एवं रचनात्मक रुप से दूर एवं पास के सगे–सम्बन्धियों से जुड़े रहते है जबकि एकल परिवारों में आज इस हद तक बिखराव है कि बच्चे अपने नजदीकी सगे–सम्बन्धियों का भी परिचय नहीं जानते, उनसे अगर पूछा जाये कि पापा की बहन के बच्चें अथवा पापा के पापा के भाई के बच्चों से आपका क्या रिश्ता है, तो अधिकतर बच्चों का उत्तर ''हमें नहीं मालूम'' अथवा नकारात्मक ही होता है। इस सामाजिक अलगांव के कारण एकल परिवार के बच्चों में शीघ्र क्रोध, उदासी, नकारात्मकता, असुरक्षा की भावना, अकेलापन जैसे नाना प्रकार के मानसिक विकार उत्पन्न हो जाते है। संयुक्त परिवार का बच्चा दूर–दूर तक रिश्तों से जुड़ा होता है जिससे उसे बड़े स्तर पर सामाजिक सुरक्षा, सहयोग एवं प्रसिद्धि स्वतः ही प्रद्धत होती है।

किसी भी विकसित समाज व विकसित देश का निर्माण वहां के नागरिकों पर निर्भर करता है। आज के बच्चे ही कल के विकसित नागरिक होंगे। अतः उन्हे संयुक्त परिवार के साथ जोड़े रखने की महती आवश्यकता है जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके जोकि देश को उच्च कोटि के नागरिक प्राप्त करने में अत्यन्त आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दबे, आर0 के0''इनडीसिपिलिन अमांग एज इन इन्डीविजूयल एण्ड ग्रुप फेनोमेनॉन एट दा स्कूल लेविल'', पी0 एच0 डी0 एजूकेशन, गोरखपुर यूनिवर्सिटी, 1971*
2. *जगन्नाथ के0''इन्वायरमेन्ट एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट'' जनर ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, 23 (1), 1986, पृ० 18–25*
3. *पाण्डेय के0 ''रिलेशनशिप बिटविन होम इन्वायरमेंट एण्ड एचीवमेन्ट एमांग डीप्रिवाइड एण्ड नान डीप्रिवाइड प्री–एडोलसेन्ट'' जनरल ऑफ दा इन्सटिट्यूट ऑफ एजूकेशन रिसर्च, 1985, पृ० 53*

4. *वर्मा एण्ड गुप्ता वी० पी० ''इन कलेस ऑफ होम इन्वायरमेन्ट ऑफ चिल्ड्रन स्कूलिस्ट एचीवमेन्ट'' जनरल ऑफ एण्ड सी० के० साइकोलोजी वोल्यूम 47, नं0 34, 1989–90, पृ० 65*
5. *अर्लली, सेनवेयर''ए कम्परीजन ऑफ दा पेरेन्टस चाइल्ड रिलेशनशिप इन गिफिटड चिल्ड्रन विद ऐकेडमिक प्रोबलम्स'' डी0 ए0 आई0 वोल्यूम–42, नं0 3–4, 1981, पृ० 1969 ए*
6. *बनें, रिचर्ड रायमण्ड''फैमिली इन्वायरमेन्ट कोरिलेटिस अडल्ट डीसीजन मैंकिंग'', डी0 ए0 आई0 (ए) 39, 10, 1978, पृ० 5443*
7. *भादोरी, लैली''ए सेल्फ कान्सेप्ट स्टेडी ऑफ फोर्थ एण्ड फिफ्थ ग्रेड चिल्ड्रेन, डी0 ए0 आई0 वोल्यूम 46, नं0 6, 1985, पृ० 1556 ए*
8. *हरबिन, केस एण्ड मेरी एलेल ' 'ए स्टेडी ऑफ पेरेन्टल इन्वायरमेन्ट एण्ड सलेक्टिड फैमिली बैंक ग्राउन्ड वेरियविल्स एजरज रिलेटेड टू दा चाइल्डस एचीवमेन्ट'' डी0 ए0 आई0 वोल्यूम 45 नं0 7–8, 1983, पृ० 2312 ए*